बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
'काव्यशास्त्र' 'खंडकाव्य'

रमेश कुमार पाण्डेय
हिन्दी - विभाग
डी॰ के॰ कालेज
डुमराँव बक्सर

खंडकाव्य की अवधारणा –

खंडकाव्य प्रबंध काव्य का ही दूसरा प्रकार है। इसमें महाकाव्य की तरह कथा चलती है। एक छंद का दूसरे छंद के साथ पूर्वापर संबंध होता है। कथा का सर्गों में विभाजन रहता है। उसके भी प्रायः वही प्रमुख तत्व होते हैं, जो एक महाकाव्य के होते हैं। परन्तु, महाकाव्य से खंडकाव्य कई दृष्टियों से भिन्न होता है।

साहित्य दर्पण में आचार्य विश्वनाथ ने खंडकाव्य का लक्षण बताते हुए लिखा है, "खंडकाव्य भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।" अर्थात् काव्य या देश के एक अंश का अनुसरण करने वाला खंडकाव्य होता है। इसका तात्पर्य यह है कि खण्डकाव्य में किसी एक प्रधान घटना का वर्णन होता है, उसमें जीवन के किसी एक पक्ष को लेकर कथा चलती है। उस तरह महाकाव्य की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित होता है। उसमें जीवन की वह अनेक रूपता और विविधता नहीं रहती जो कि महाकाव्य में होती है। उसमें तो कहानी और एकांकी की तरह एक ही प्रधान घटना के लिए सामग्री जुटाई जाती है।

हिन्दी के विचारकों में सबसे अधिक विस्तार तथा स्पष्टता के साथ आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने खंडकाव्य के रचना - स्वरूप पर विचार किया है। खंडकाव्य की परिभाषा देते हुए

उन्होंने कहा है कि "महाकाव्य के ही ढंग पर जिस काव्य की रचना होती है, पर जिसमें पूर्ण जीवन न ग्रहण करके खण्डजीवन ही ग्रहण किया जाता है, उसे खण्डकाव्य कहते हैं। यह खंड जीवन इस प्रकार व्यक्त किया जाता है, जिससे वह प्रस्तुत रचना के रूप में स्वत: पूर्ण होता है।"

संस्कृत और हिन्दी के विद्वानों के विचारों को दृष्टि पथ में रखकर समन्वयात्मक दृष्टि से विचार करें तो हम कह सकते है कि खण्डकाव्य ऐसी प्रबंध कविता है, जिसमें जीवन की विविधता विस्तार और कथा की विशालता के स्थान पर उसके किसी एक खंड का बंधा हुआ, मार्मिक और सोद्देश्य चित्रण होता है।

अपने इस निष्कर्ष के आधार पर हम खंडकाव्य के रचनातत्वों को निर्धारित कर सकते हैं। खंडकाव्य की सफलता जिन तत्त्वों पर निर्भर करती है वे हैं - संक्षिप्त आकार, जीवन-खंड को ही लक्ष्य में रखना इसलिए संक्षिप्त कथानक, कथा-संगठन में अधिक से अधिक प्रभावान्विति, चरित के भावाभिव्यंजन पक्ष पर बल, जीवन के किसी न किसी सत्य को उद्घाटित करने की क्षमता, वस्तु की अपेक्षा भाव-बंध पर बल आदि। यही वे तत्व हैं जो इस विधा को उसका वास्तविक स्वरूप प्रदान करते है।

हिन्दी के उपलब्ध आदिकालीन काव्य के स्वरूप है. इनमें अब्दुल रहमान का 'संदेश रासक', नरपति नाल्ह का 'बीसलदेव रासो' आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। इनमें कलात्मकता का अभाव है फिर भी 'संदेश रासक' को विशेष रूप से खंड-प्रबन्ध कविता की पहली रचना कहा जा सकता है।

सगुण भक्तिधारा के कुछ कवियों ने अवश्य सफल खंड काव्यों की रचना की है। इनमे नरोत्तमदास का 'सुदामाचरित', नंददास का 'भंवरगीत' और रुक्मिणी मंगल, गोस्वामी तुलसीदास कृत 'पार्वती-मंगल' और 'जानकी मंगल' उल्लेखनीय खण्डकाव्य है।

आधुनिक काल में खंड काव्यों की रचना पर्याप्त हुई है। भारतेन्दु काल में पुरानी और नयी दोनों धाराओं की खंड काव्य कृतियां मिलती है। रत्नाकर की दो कृतियां 'हरिश्चन्द्र' और 'उद्धवशतक' इस युग की पुरानी धारा की सर्वोत्तम खंड काव्य कृतियां हैं।

छायावाद-काल में सुमित्रानंदन पंत की 'ग्रंथि' जयशंकर प्रसाद का 'प्रेमपथिक' रामकुमार वर्मा का 'चित्तौड़ की चिता', निराला का 'तुलसीदास' इस विधा की अमूल्य निधियाँ हैं।

छायावादोत्तर काल में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कृत 'प्राणार्पण' सोहनलाल द्विवेदी कृत 'कुणाल' रामधारी सिंह दिनकर कृत 'कुरुक्षेत्र' और नरेन्द्र शर्मा कृत द्रौपदी और सुवर्ण आदि प्रमुख हैं।

नयी कविता-धारा में अनेक खंडकाव्य मिलते हैं। ये सभी आधुनिक चेतना से संपन्न हैं। इनमें प्रबन्ध-चेतना पूर्ववर्ती रचनाओं से नितांत भिन्न है। ऐसी रचनाओं में 'कनुप्रिया' धर्मवीर-भारती, संशय की एक रात, नरेश मेहता, आत्मजयी कुंवर नारायण, 'एक कंठ विषपायी' दुष्यंत कुमार आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी — विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)